INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: X	Department: Hindi	Date of submission: NA
Question Bank: 13	**Topic: पतझड़ में टूटी पत्तियाँ**	Note: Pl. file in portfolio

पाठ - **पतझड़ में टूटी पत्तियाँ -रवीन्द्र केलेकर - 1925**

1. गिन्नी का सोना 2. झेन की देन

प्रश्न 1. शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग क्यों होता है?

उत्तरः शुद्ध सोना बिना किसी मिलावट के होता है जबकि गिन्नी के सोने में ताँबे की मिलावट होती है। गिन्नी का सोना शुद्ध सोने से अधिक मजबूत और चमकदार होता है।

प्रश्न 2. प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

उत्तरः प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' उसे कहते हैं जो आदर्शों को व्यवहार में लाकर जीने योग्य बनाता है।

प्रश्न 3. पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श क्या है?

उत्तरः पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श शुद्ध सोने के समान अपने सत्य, मूल्य या सिद्धांत पर अडिग रहना है।

प्रश्न 4. लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगाने की बात क्यों कही है?

उत्तरः लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगाने की बात इसलिए कही है क्योंकि जापानियों का दिमाग बहुत तेज गति से चलता है।

प्रश्न 5. जापान में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं?

उत्तर: जापान में चाय पीने की विधि को 'टी-सेरेमनी' (चा-नो-यू) कहते हैं। यह झेन परंपरा की देन है।

प्रश्न 6. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

उत्तरः जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, वह स्थान पर्णकुटी जैसा सुसज्जित होता है। प्राकृतिक ढंग से सजे इस स्थान पर पूर्ण शांति होती है। इस स्थान की यही विशेषता है ।

प्रश्न 7. शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?

उत्तरः शुद्ध आदर्श शुद्ध सोने की तरह होते हैं। उसमें बिलकुल मिलावट नहीं होती। व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से इसलिए की गई है क्योंकि जिस प्रकार ताँबे के मिश्रण से सोने में चमक आती है । उसी प्रकार व्यावहारिकता के समावेश से आदर्श भी सुंदर और मजबूत हो जाते हैं। जीवन में आदर्शों के साथ व्यावहारिकता की भी आवश्यकता होती है।

प्रश्न 8. चाजीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं ?

उत्तरः चाजीन ने अतिथियों का स्वागत, अँगीठी सुलगाना, उस पर चायदानी रखना, चाय के बर्तन लाना, उन्हें तौलिए से साफ करना आदि क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं।

प्रश्न 9. 'टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

उत्तरः 'टी-सेरेमनी में केवल तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता था क्योंकि अधिक आदमियों के आने से शांति भंग होने का डर रहता है । यहाँ शांत बैठकर लगभग डेढ़ घंटे तक एक-एक बूँद करके चाय पीनी होती है। इसलिए अधिक लोगों को प्रवेश नहीं दिया जाता था।

प्रश्न 10. चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

उत्तरः चाय पीने के बाद लेखक ने अनुभव किया कि मानो उसके दिमाग की गति धीमी हो गई हो। धीरे-धीरे दिमाग चलना बंद हो गया। उसे सन्नाटा भी सुनाई देने लगा। चाय पीते-पीते लेखक के दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण उसके सामने थे।

प्रश्न 11. गांधीजी में नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता थी, उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तरः गांधीजी में नेतृत्व की अदभुत क्षमता थी। वे सभी लोगों को साथ लेकर चलते थे। वे अपने आदशों में व्यावहारिकता को नहीं मिलने देते थे बल्कि व्यावहारिकता में आदर्श मिलाते थे। वे अपने स्वार्थों को किसी भी कार्य में बाधा नहीं बनने देते थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण जनता उनके पीछे हो जाती थी।

प्रश्न 12. आपके विचार से कौन-से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए ।

उत्तरः आज व्यावहारिकता का जो स्तर है उसमें आदर्शों का होना बहुत आवश्यक है। 'कथनी और करनी' के अंतर ने समाज को आदर्श से हटाकर स्वार्थ और लालच की ओर धकेल दिया है। सत्य, अहिंसा, परोपकार जैसे मूल्य शाश्वत मूल्य हैं। सत्य और अहिंसा के बिना राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए परोपकार, त्याग, एकता, भाईचारा तथा देश प्रेम की भावना का होना अत्यंत आवश्यक है।

प्रश्न 13. लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तरः लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के निम्नलिखित कारण बताएः

(i) जीवन की रफ्तार का बहुत अधिक बढ़ जाना।

(ii) जब चलने के स्थान पर दौड़ा जाए।

(iii) अकेले में बड़बड़ाने लगना।

(iv) दिमाग में स्पीड का इंजन लगाना।
(v) दिमागी तनाव बढ़ जाना।
(vi) एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ ।
हम इन सब कारणों से सहमत हैं। इनसे मनुष्य का मानसिक संतुलन बिगड़ता है।

प्रश्न 14. लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः लेखक के अनुसार, हम अक्सर बीते हुए दिनों के बारे में सोचते हैं या भविष्य के रंगीन सपनों में डूबे रहते हैं। वास्तव में सत्य तो केवल वर्तमान है और हमें उसी में जीना चाहिए। अतीत को हम चाह कर भी लौटा नहीं सकते और भविष्य को हमने देखा नहीं है। वर्तमान के एक-एक पल को जीना ही वास्तव में जीवन जीना है।

प्रश्न 15. समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः आदर्श एवं मूल्यों का परस्पर घनिष्ठ संबंध होता है। आदर्शवादी लोग ही समाज में आदर्शों की स्थापना करते है। समाज में सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, समानता व बंधुता जैसे ऐसे शाश्वत तत्व हैं जो आदर्शवादियों द्वारा प्रदान किए गए हैं, जिनका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं हो सकता।

प्रश्न 16. जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझ-बूझ ही आगे आने लगती है। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः लेखक यहाँ स्पष्ट करना चाहता है कि जब आदर्श और व्यवहार में से लोग आदर्शों को भूलने लगते हैं और व्यावहारिकता को महत्त्व देने लगते हैं तो उनका व्यवहार धीरे-धीरे पतन की ओर जाने लगता है। लोगों का ध्यान आदशों को छोड़ने की ओर लगा रहता है। इस प्रकार पतन के मार्ग खुल जाते हैं।

प्रश्न 17. हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः लेखक यहाँ स्पष्ट करना चाहता है कि जापानी लोगों के जीवन की गति बहुत तेज हो गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं, तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।

प्रश्न 18. सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूंज रहे हों । आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः 'टी-सेरेमनी' में सभी कार्य इतने गरिमापूर्ण ढंग से किए गए मानो एक-एक काम से संगीत का जयजयवंती राग निकल रहा हो। प्रत्येक कार्य मन को आकर्षित करने वाला प्रतीत हुआ।

प्रश्न - निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

(क) चंद लोग कहते हैं गांधी जी प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी कीमत जानते थे। इसीलिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। वरना हवा में ही उड़ते रहते। देश उनके पीछे न जाता।

हाँ, पर गांधीजी कभी आदर्शोंको व्यवहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदशों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में तांबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था। व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते है। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहार लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) गांधीजी अपने विलक्षण आदर्श चला सके क्योंकि-

(i) वे प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट थे (iii) वे व्यावहारिकता को पहचानते थे

(ii) वे व्यावहारिकता की कीमत जानते थे (iv) उपरोक्त कोई नहीं

(ख) कौन अपने आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देता था?

(i) लेखक (ii) गांधी जी (iii) प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट (iv) उपरोक्त सभी

(ग) कैसे लोग हमेशा सजग रहते हैं?

(i) आदर्शवादी (ii) आइडियालिस्ट (iii) उपरोक्त दोनों (iv) व्यवहारवादी

(घ) आदर्शवादी लोगों की विशेषता है-

(i) खुद ऊपर चढ़ते है और दूसरों को भी चढ़ाते है

(ii) न स्वयं ऊपर जाते हैं न किसी को जाने देते हैं

(iii) हर काम का हिसाब-किताब लगाते हैं

(iv) उपरोक्त सभी

(ङ) समाज को किसने गिराया है?

(i) आदर्शवादियों ने (ii) विलक्षण प्रतिभावालों ने

(iii) चरित्रहीनों ने (iv) व्यवहारवादियों ने

(ख) अक्सर हम या तो गुजरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था। और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था। जीना किसे कहते हैं, उस दिन मालूम हुआ।

(क) हम अक्सर भूत या भविष्य में उलझे रहते हैं कैसे?

(i) गुजरे जमाने की याद में खोकर (ii) भविष्य के रंगीन सपने देखकर

(iii) उपरोक्त दोनों (iv) काल्पनिक चीजें है

(ख) भूत, भविष्य दोनों मिथ्या हैं क्योंकि-

(i) एक चला गया (ii) दूसरा आया नहीं

(iii) उपरोक्त दोनों (iv) पारिवारिक विकास में

(ग) लेखक के अनुसार सत्य है-

(i) भूतकाल (ii) वर्तमान काल (iii) भविष्यत काल (iv) जीवन काल

(घ) हम अक्सर किस काल में रहते हैं?

(i) भूतकाल (ii) भविष्यत काल (iii) उपरोक्त दोनों (iv) वर्तमान काल

(ङ) हमें किस काल में जीना चाहिए?

(i) भूतकाल (ii) भविष्यत काल (iii) वर्तमान काल (iv) जीवन काल